"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार"
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था संचालित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)

हिंदी विभाग

शैक्षिक वर्ष 2024 - 25

दि. 05/09/2024

नोटिस

वरीष्ठ महाविद्यालय के हिंदी विभाग के बी. ए. भाग एक, दो, तीन और बी. कॉम. भाग एक के सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि शैक्षिक वर्ष 2024-25 का पहले सत्र का अंतर्गत मूल्यमापन (होम असाइमेंट/ टेस्ट/ सेमिनार /प्रोजेक्ट) दि. 25/09/2024 तक कमरा क्रमांक – 308, हिंदी विभाग में जमा करें।

डॉ. आरिफ महात

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

विभाग प्रमुख
हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज कोल्हापूर.
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Session:NEP 2.0 MAR - APR 2025

Course:B.Com.B.COM. - FY SEM - II

Subject: HINDI - II (2OEC02HIN21) - CIE

Min/Max : 7/20

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2024025534	5592014	LAXMAN PRABHURAM MALI	20	0
2	2024025535	5592016	LOKESH SOMARAM MALI	20	0
3	2024025492	5592020	BHAVESH KOOPARAM CHAUDHARI	20	0
4	2024025485	5592023	MIHIR MILIND BARVE	20	0
5	2024025507	5592045	SWALIHA ASIF FAKIR	20	0
6	2024025551	5592059	AYESHA FIROJ NAGARAJI	20	0
7	2024025612	5592061	SADIKAKHATOON DOSTMOHAMMAD CHOUDHARY	20	0
8	2024025527	5592079	SANIYA JAINUL KHAN	20	0
9	2024025541	5592097	SHAFKATHUSEN SAKHAVATHUSEN MOMIN	20	0
10	2024025486	5592098	ANUSHKA DILIP BAVANE	20	0
11	2024025545	5592099	VAISHNAVI SARJERAO MORE	20	0
12	2024025540	5592102	TANISHA UDAY MITHARI	18	0
13	2024025564	5592104	PRUTHVIRAJ SAMPAT PATIL	20	0
14	2024025555	5592106	SHRUSHTI KRUSHNAT NIKAM	20	0
15	2024025539	5592110	MAYURI MAHADEV METIL	20	0
16	2024025515	5592111	KARTIK RAJESH GURAV	20	0
17	2024025522	5592112	KALEKAR SHREYA AMAR	20	0
18	2024025503	5592114	DHANKWALA BUSHRA AKHTAR	17	0
19	2024025514	5592127	MITALI VIKAS GUNDE	20	0
20	2024025590	5592140	SANIYA BABASO SHAIKH	20	0
21	2024025562	5592142	NIKHIL JALANDHAR PATIL	20	0
22	2024025639	5592148	KAMBLE MANASI ANIL	20	0
23	2024025476	5592152	BHOOMI SUNIL AGARWAL	20	0
24	2024025487	5592155	SIDDHI DATTATRAY BAVANE	20	0
25	2024025529	5592159	KULKARNI OM AVDHUT	20	0
26	2024025516	5592161	PRIYANKA DANAPPA GURAV	20	0
27	2024025502	5592178	DEVALE MUSTAFA FIROZ	20	0
28	2024025501	5592189	DESAVALE VEDANT VIVEK	17	0
29	2024025531	5592202	PRATHAMESH PRASHANT KURANE	20	0
30	2024025498	5592203	DARSHAN SANDEEP CHIMANE	20	0
31	2024025598	5592205	ULAPE SAMIKSHA DEEPAK	20	0
32	2024025574	5592212	TIPANNA NAGESH PUJARI	17	0
33	2024025489	5592213	BHOSALE VIVEK PARSHURAM	20	0
34	2024025491	5592216	BOBADE GULAMMURTAZA YASIN	20	0
35	2024025636	5592217	KAMBLE ARUNA RAJENDRA	20	0
36	2024025519	5592221	JADHAV RANVEER AMOL	14	0
37	2024025336	5592222	JADHAV ATHARVA NILESH	16	0
38	2024025583	5592223	SANKPAL ADITYA PRASHANT	20	0
39	2024025575	5592235	JANHAVI VILAS RABADE	20	0
40	2024025695	5592236	SOHEL CHAND WARUNKAR	20	0
41	2024025571	5592238	POWAR PAYAL RAJU	20	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Internal Examiner

Mobile Number

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course: B.Com.B.COM. - FY SEM - II **Session:** NEP 2.0 MAR - APR 2025

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
42	2024025594	5592240	REHAN JAVED TAMBOLI	20	0
43	2024025699	5592249	SHITOLE SHREYA PRITHVIRAJ	17	0
44	2024025547	5592264	MULIK SWAROOP CHINTAMANI	17	0
45	2024025396	5592277	NILAMKUMARI NARAYANLAL PUROHIT	20	0
46	2024025548	5592284	MAYURI SANJAY MURTI	20	0
47	2024025569	5592288	PRAGATI NAGRAJ PAWAR	16	0
48	2024025532	5592297	MACHHALE KRISH AVICHAND	17	0
49	2024025496	5592303	VAISHNAVI BABURAO CHAVAN	20	0
50	2024025576	5592306	RELEKAR SAMRUDDHA YOGESH	17	0
51	2024025512	5592308	GHURE HARSHAD BABAN	17	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

Scanned with OKEN Scanner

25948

Signature of Jr. Super.

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)
कोल्हापूर

20/20 Total

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर. (अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

______ परीक्षेच्या ______ या विषयाच्या प्रयोग परीक्षा

Practical Examination in, Semester - II (2025)

at the Hindi Examination

उमेदवराचा आसन क्रमांक (Candidate's Seat No.) 5598098 विभाग (Section) Anushka Dilip Bavane

उमेदवारांना सूचना

१. प्रश्न काळजीपूर्वक वाचा आणि त्याप्रमाणे विचारलेला प्रयोग करा.
२. उपकरणांच्या वापराबाबत तुम्हांला काही माहीत नसेल तर परीक्षक किंवा प्रयोगशाळा सहाय्यक यांना तुम्हाला मदत करण्याविषयी विनंती करा.
३. कोणताही विद्युतप्रयोग करण्यापूर्वी, प्रत्यक्ष पुरविलेली सर्व उपकरणे आणि सर्व 'कनेक्शन' नीट पाहून घेऊन संबंधित कामाची नीटनेटकी कार्ययोजना करण्याची नितांत आवश्यकता आहे आणि ह्यानंतर पुढे काम चालू करण्याविषयी परीक्षकांची परवानगी मिळविणे आवश्यक आहे.
४. सर्व निरीक्षणे कोटकवजा तक्त्यात भरावी. मधल्या सर्व गणना आणि निर्णय हे क्य तितक्या सुवाच्चपणे आणि स्पष्टपणे नोंदविलेले असणे हे हितावह आहे.
५. प्रारंभिक किंवा अंतिम निरीक्षणात संख्यावाचक आकडे एकावर एक लिहू नयेत. जर लिहिलेला कोणताही आकडा नको असेल तर त्यावर एक रेघ ओढून पाहिजे असलेला आकडा त्याच्याजवळ लिहा. प्रयोगशाळेतून बाहेर पडण्यापूर्वी आपले टेबल चांगल्या स्थितीत आहे याची खात्री करा.

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

1. Read the question carefully and perform the experiment as required.
2. If there by anything the apparatus that you do not know, ask the examiner or the laboratory assistant to help you.
3. Before doing any electrical experiment, it is absolutely essential that you make a neat working sketch of all apparatus actually provided and of the necessary connection and obtain the examiner's permission to proceed.
4. Express all observations in a tabular form. It is also desirable that all intermediate calculations and results should be entered as neatly and clearly as possible.
5. No numerical figures should be written over either in the preliminary or final observations. If any figure is shought to be discarded it should be run through and the desired figure written near to it.
6. Please see that your table is in good order before you leave the laboratory.

(येथून लेखनास सुरवात करा.) (Begin writing here.)

प्र. क्र. Q. No.

1 बिंदा महाराज कहानी की आधार पर किन्नरो की कथा व्यथा स्पष्ट किजिए।

→ बिंदा महाराज की कहानी किन्नर समुदाय की जिंदगी के संघर्षों और चुनौतियों को उजागर करती है। यहाँ कुछ बिंदु दिए गए है जो किन्नरों की कथा और व्यथा को स्पष्ट करते है।

स्वामजिक बहिष्कार और भेदभाव किन्नर समुदाय अक्सर सामाजिक बहिष्कार और भेदभाव का सामना करते है। लोग उन्हें अजीब या असामान्य मानते है और अक्सर उनसे [illegible] से अलग रखते है।

Vivekanand College Kolhapur (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

02	Section	Q. No.												
		Marks												

प्र. क्र. Q. No.

पहचान की लडाई किन्नरों को अकसर अपनी पहचान के लिए लडना पडता है। वे अपने लिंग और यौन अभिविन्यास के बारें में स्पष्ट नहीं हो पाते हैं, जिससे उन्हें समाज मे स्विकृति नहीं मिलती है।

- आर्थिक संघर्ष :- किन्नर समुदाय अकसर आर्थिक संघर्ष का सामना करना पडता है। उन्हें नौकरियों में भेदभाव का सामना करना पडता है। और अकसर उन्हें कम वेतन वाली नौकरियों में काम करना पडता है।

- स्वास्थ्य सेवाओं की कमी :- किन्नर समुदाय को अकसर स्वास्थ्य की सेवाओं की कमी का सामना करना पडता है। उन्हें विशेषज्ञ डॉक्टर और स्वास्थ्य सेवा नही मिल पाती जिससे उनकी स्वास्थ्य समस्याएँ बढ जाती है।

- शिक्षा कि कमी :- किन्नर समुदाय को अकसर शिक्षा की कमी का सामना करना पडता है। उन्हें अच्छी शिक्षा प्राणाली में भेदभाव का सामना करना पडता है। और अकसर उन्हें शिक्षा से वंचित रहना पडता है।

- आत्महत्या की दर :- किन्नर समुदाय मे आत्महत्या की दर बहुत आधिक है। उन्हे समाज मे स्वीकृती, स्वास्थ्य संबधीत सेवा, शिक्षा, नौकरी नहीं मिलने के कारण और संघर्षो के कारण किन्नर समुदाय अकसर आत्महत्या का विचार करती है।

बिंदा महाराज की कहानी इन सभी मुद्दों को उजागर करती है। और किन्नर समुदाय की जिंदगी के संघर्ष और चुनौतियाँ को स्पष्ट करती है।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

Section	Q. No.												03
	Marks												

प्र. क्र. Q. No.

"आँखो की कालिमा पर काली छाया, सुखे होंठो पर पीला प्रकाश, अस्थिर चित्त की डोलती रोशनी की यह लुका-छिपी यही जीवन है बिंदा महाराज का प्यार उसकी आतमा की प्यास थी, किंतु परिणामहीन प्रेम को वह समझ नहीं पाता"

कहानी की ये प्रक्तियाँ बिंदा महाराज के जीवन सत्य और उसके अंतर्विरोध को स्पष्ट कर देते है। मुसकान का दुपहरिया के फुल की तरह झुलसकर बिखरना बिम्ब जीवन की जटिलता को भाषा में पकडने का आग्रह है। बिंदा महाराज पुरी उम्र प्रेम के लिए तरसता है और अंत में उसे प्रेम में छोडकर चले जाने की पिडा से इतना भय लगता है की वह अकेला पन कमा लेता है। फिर यदि कोई प्रेम की नजर उनके परछाई की ओर भी बढती है तो वह उससे एक खास दुरी बना लेता है फिर वह चाहे उसका भतीजा करीमा हो या घुरनि घुरविनवा। उसके जीवन में मुन्ना का आना और बुआ कहकर पुकारना मन की रेती पर बारिशों की फुहारा सा था पर उसकी मौत का उसके साथ का असर कहकर कलकित करना उसे भीतर तक तोड जाता है। यही कहानी का वह मार्मिक बिंदु है जहाँ कहानी का कैनवास व्यष्ठि से समष्टि तक फैल जाता है।

बिंदा महाराज के अन्दर मानवीय व्यापकता और संवेदनशील हृदय की गहराई है लेकिन स्त्री-पुरुष तर होने के कारण उसे उपेक्षित जीवन व्यतीत करना पडता है। बिंदा महाराज जैसे तमाम स्त्री-पुरुषेतर व्यक्ति इस तरह के उपेक्षित जीवन व्यतीत करते है इन्हें सामान्य जीवन द्वारा से बिलकुल अलग करके देखा जाता है क्या इस तरह के व्यक्तियों की यही नियति है क्या समाज द्वारा उपेक्षित यह पात्र अपनी इस स्थिति के लिए स्वयं ~~जिम्मेदार~~ जिम्मेदार है? अगर नहीं तो अखिरकार क्यों वह समाज मे सामान्य जीवन जीने का अधिकार नही है? क्यों समाज में अलग जीवन जीने के लिए मजबूर किया

ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

04	Section	Q. No.												
		Marks												

प्र. क्र.
Q. No.

क्या हमारा समाज इतना क्रूर और निर्मम है की प्रकृति प्रदत्त इस कमजोरी में उस व्यक्ति का साथ देने की जगह उपेक्षित जीवन जीने के लिए मजबूर करें? जबकि इसमें उस व्यक्ति का दोष नहीं। शिवप्रसाद सिंह कहते है कि "मैं उस उपेक्षित जीवन को भी एक मूल्य देना चाहता था जिसके अन्दर पिडा का बोध मानवीय पीडा को भी लाँघ जाता है। जो पुरुष नहीं दे पाता, जो नारी नहीं दे पाती, वह किन्नर दे जाता है।

बिंदा महाराज की कहानी किन्नरों के आत्मसम्मान और समाज उनके अधिकारों की लड़ाई का प्रतीक है। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करती है की समाज के इस वर्ग को क्या हशिए पर रखा जाता है। अगर हर व्यक्ति यह समझे की सभी इंसान समाज है, तो किन्नरों के जीवन की वह यह कथा - व्यथा खत्म हो सकती है। समाज में समाजत, समर्पण और संवेदनशीलता का भाव किन्नरों के जीवन को बेहतर बना सकता है।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

20/20

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - FY SEM - II

Session:NEP 2.0 MAR - APR 2025

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
Subject: AADHUNIK HINDI KAVITA AUR RACHNATMAK LEKHAN(2DSC01HIN21) - CIE					
Min/Max : 4/10					
1	2024014230	3372004	SAWANT SNEHAL BASAPPA	8	0
2	2024014079	3372011	KAMBALE SNEHAL YOGESH	10	0
3	2024014083	3372014	BHAGYASHRI BHIMRAO KAMBLE	10	0
4	2024014172	3372026	MAHEK IMRAN MULLANI	10	0
5	2024014174	3372028	NAJIYA RAKESH NADAF	10	0
6	2024014168	3372032	MORE MONIKA BALU	10	0
7	2024014265	3372033	TIBILE KARUNYA YUVRAJ	10	0
8	2024014055	3372034	SWATI DIPAK HINGOLE	10	0
9	2024014117	3372036	ARPITA JEEVAN KHAMKAR	10	0
10	2024014027	3372038	SAYALI DADASO CHOUGULE	10	0
11	2024014116	3372039	SAKSHI SATISH KHADE	10	0
12	2024014243	3372043	HARSHAL LAXMAN SHINDE	10	0
13	2024014010	3372044	PRAVIN PRABHAKAR BALNAIK	10	0
14	2024014115	3372048	AYUSH RAJU KHADE	10	0
15	2024014139	3372051	SIDDHI NANASO LOHAR	10	0
16	2024014060	3372052	ANJALI PRASHANT JADHAV	10	0
17	2024014087	3372054	KAMBLE MADHURI SATAPA	10	0
18	2024014235	3372055	SHAIKH SWALIHA IMRAN	10	0
19	2024014009	3372056	BAGWAN ASHPAK RAJU	9	0
20	2024014078	3372057	POONAM ANIL KALE	10	0
21	2024014229	3372071	SAWANT RIYA NITIN	10	0
22	2024014201	3372072	SANIKA SANJAY PATIL	10	0
23	2024014146	3372080	NIKITA SANTOSH MAGDUM	10	0
24	2024014081	3372083	ADITYA KRUSHNAT KAMBLE	8	0
25	2024014218	3372086	POWAR YASH PRAKASH	10	0
26	2024014012	3372087	SHIVAJI VITTHAL BANSODE	10	0
27	2024014251	3372089	AVINASH KISHOR SHIVAGAN	10	0
28	2024014193	3372090	ATHARV AMAR PATIL	10	0
29	2024014058	3372091	PRAVIN ASHOK HOSMANI	10	0
30	2024014042	3372093	GARDI ASHFANA SAHIL	10	0
31	2024014269	3372095	NEETA YALLAPPA WALAWLKAR	8	0
32	2024014214	3372098	PREM NITIN PINGALE	10	0
33	2024014213	3372103	HARSHWARDHAN MOHAN PINGALE	10	0
34	2024014076	3372104	KADAM TEJAS PRATAP	8	0
35	2024014196	3372105	PATIL NEHA RANJIT	10	0
36	2024014211	3372106	TITIKSHA YUVRAJ PATOLE	10	0
37	2024014069	3372107	JAMBHALE PIYUSH ANANDA	10	0
38	2024014039	3372109	GAIKWAD SATYAJIT SANJAY	10	0
39	2024014228	3372110	SUPRIYA RAMA SATHE	10	0
40	2024014019	3372111	PRATIKSHA BAJIRAO BUDHALE	10	0
41	2024014255	3372112	ADITI SUKHDEV SUTAR	10	0
42	2024014140	3372113	LOKARE USHA JALINDAR	10	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Internal Examiner

Mobile Number

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - FY SEM - II

Session:NEP 2.0 MAR - APR 2025

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
43	2024014147	3372114	MAHAT SAHIL NOORMAHMAD	10	0
44	2024014114	3372115	VIDYA TANAJI KHADAKE	10	0
45	2024014118	3372116	KHOPKAR SWAPNALI BABASAHEB	10	0
46	2024014048	3372118	GONGANE TEJU UTTAM	8	0
47	2024014159	3372119	MASHAL AKIB RAFIK	9	0
48	2024014031	3372121	AMIR SAMEER DANAWADE	8	0
49	2024014272	3372122	RUSHIKESH DIPAK WAVARE	10	0
50	2024014223	3372123	SALOKHE ADITYA RANJEET	10	0
51	2024014099	3372124	SNEHAL SHIVAJI KAMBLE	10	0
52	2024014270	3372127	WASKAR RAJWARDHAN SANJAY	8	0
53	2024014041	3372128	GANGWANI BHUMIKA JAYKUMAR	10	0
54	2024014190	3372132	AAFTAB ABDULGANI PATEL	10	0
55	2024014001	3372142	AAMANE TANUJA RAMESH	8	0
56	2024014164	3372143	MODIKAR SUMIT YUVRAJ	10	0
57	2024014233	3372144	SHAIKH RAMJAN DASTAGIR	10	0
58	2024014241	3372145	SHIKALGAR TANJILA JAMIR	10	0
59	2024014113	3372152	KENGAR AISHWARYA KIRAN	8	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Tupets

(Dr. Dipak Tupe)

Scanned with OKEN Scanner

॥ ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यासाठी शिक्षण प्रसार ॥
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)
कोल्हापूर

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR.
(Empowered Autonomous)

SUPPLIMENT

10/10

Jr. Supervisor's Sign. :	
Students Sign. :	
Seat No. :	
Seat No. in words :	
Suppliment No. :	
	18998
Centre	

Roll No :- 4174

प्र. क्र.
Q. No.

• नाम :- नाजिया राकेश नदाफ
• कक्षा :- बी. ए. भाग - ०१
• विषय :- हिंदी

प्रश्न प्रस्तुत कविता 'ले चल वहाँ भुलावा देकर' का आशय स्पष्ट किजिए।

उत्तर प्रस्तुत कविता 'ले चल वहाँ भुलावा देकर' के कवि एवं रचयिता जयशंकर प्रसाद जी है। यह कविता जयशंकर प्रसाद जी के 'लहर' इस काव्यग्रंथ से उद्धृत है। प्रस्तुत गीत उन्होंने दिसंबर १९३१ में जगन्नाथपुरी के समुद्रतट पर बैठकर लिखा था। इस कविता मे अव्यक्त की ओर संकेत है। कवि कोलाहल भरी पृथ्वी से दूर जाकर अंबर के कानों मे प्रेमकथा कहना चाहता है। क्योंकी कोलाहलमय भरी इस संसार से कवि का मन ऊब गया है। अत: वह अपने मन या आत्मारूपी नाविक से कहता है की तू मुझे बहलाकर इस कोलाहल से दूर एकांत की ओर मे ले चल।

कवि नाविक को ऐसे स्थान पर ले चलने को कहता है जहाँ आकाश के कानों में सागर की

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous)

02	Section	Q. No.											
		Marks											

प्र. क्र. Q. No.

लहरें अपनी निश्छल प्रेम कहानी गंभीरता से कह रही हो। तू मुझे उस जगह ले चल, जहाँ जीवन की छाया संध्या की तरह शिथिल होकर औरों के लिए सहानुभूति के आँसू बहाती हो। अर्थात जहाँ दीन-दुखियों के लिए सहानुभूतिपूर्ण वातावरण हो। कवि की कामना है की उसका मनरूपी नाविक उन्हें एकांत क्षितिज के किनारे ले चले जहाँ श्रम और विश्राम एक हो जाता है। तथा जिस क्षितिज रेखापर उषा अमर जागरण का उज्जवल प्रकाश फैलाती हो। अर्थात जहाँ ज्ञान का ऐसा प्रकाश मिले, जो सतत जाग्रत रखे। कवि अपने मन को संसार के कोलाकहल से दूर किसी एकांत परंतु मनोरम स्थान पर ले जाने को कहते हैं, जहाँ का वातावरण निश्छल प्रेमभाव और सहानुभूति से पूर्ण हो। जहाँ विश्व का सुख-दुखमय संसार परमात्मा की सत्य की तरह मालूम हो और जहाँ अमर जागरण के ज्ञान का प्रकाश फैला हो।

जयशंकर प्रसाद जी ने इस कविता के द्वारा एक दार्शनिक सत्य का उद्घाटन किया है। प्रसाद जी मन यानी की आत्मा रूपी नाविक को संसार के कोलाहल से दूर ले चलने को कहते हैं। 'नाविक' ब्रह्मा का प्रतिक है और ब्रह्मा संसार सागर का खेवनहार (नाविक) है। यह 'ब्रह्मा' ही प्रत्येक जीव को संसार-सागर ~~भ~~ को पार करके मुक्ती के किनारे तक पहुँचा सकता है। चलचित्र के

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

की तरह यह संसार-सागर भी मायात्मक हैं। अर्थात यह जगत एक माया है, भासमान हैं।

ब्रह्म ही सत्य हैं। इसलिए जीव निश्छल प्रेम की दुनियाँ का आकांक्षी हैं। कवि ने अंत मे परम ब्रह्म उषाबेला रूपी नेत्रो से अमर जागरण का संदेश दिया हैं। कवि ने यहाँ ब्रह्म अर्थात ही परमात्मा की व्यापकता का उल्लेख किया हैं, जो सत्य हैं। परमात्मा की तरह सुखदुख की मधुर गंभीर छाया भी संसार मे सर्वत्र व्याप्त हैं। कवि चाहता है कि जैसे परमात्मा की व्यापकता सत्य है, वैसे ही ये सुख: दुख भी सत्य बनकर उन्हें दिखाई दे। यहाँ दार्शनिकता तथा रहस्यवाद की झाँकी दिखाई देती हैं, जो छायावाद का एक व्यवच्छेदक लक्षण भी हैं।

प्रस्तुत कविता 'ले चल वहाँ भुलावा देकर' मे कवि जयशंकर प्रसाद जी की कविता के माध्यम से यह सभी आशय स्पष्ट किए जा सकते हैं।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - FY SEM - II

Session:NEP 2.0 MAR - APR 2025

Subject: MEDIA LEKHAN (2VSC01HIN21) - CIE

Min/Max : 4/10

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2024014172	3372026	MAHEK IMRAN MULLANI	10	0
2	2024014174	3372028	NAJIYA RAKESH NADAF	10	0
3	2024014055	3372034	SWATI DIPAK HINGOLE	10	0
4	2024014243	3372043	HARSHAL LAXMAN SHINDE	10	0
5	2024014010	3372044	PRAVIN PRABHAKAR BALNAIK	10	0
6	2024014115	3372048	AYUSH RAJU KHADE	10	0
7	2024014081	3372083	ADITYA KRUSHNAT KAMBLE	8	0
8	2024014058	3372091	PRAVIN ASHOK HOSMANI	10	0
9	2024014042	3372093	GARDI ASHFANA SAHIL	10	0
10	2024014269	3372095	NEETA YALLAPPA WALAWLKAR	10	0
11	2024014140	3372113	LOKARE USHA JALINDAR	10	0
12	2024014147	3372114	MAHAT SAHIL NOORMAHMAD	9	0
13	2024014118	3372116	KHOPKAR SWAPNALI BABASAHEB	9	0
14	2024014048	3372118	GONGANE TEJU UTTAM	10	0
15	2024014031	3372121	AMIR SAMEER DANAWADE	10	0
16	2024014223	3372123	SALOKHE ADITYA RANJEET	10	0
17	2024014041	3372128	GANGWANI BHUMIKA JAYKUMAR	10	0
18	2024014190	3372132	AAFTAB ABDULGANI PATEL	10	0
19	2024014164	3372143	MODIKAR SUMIT YUVRAJ	10	0
20	2024014233	3372144	SHAIKH RAMJAN DASTAGIR	10	0
21	2024014241	3372145	SHIKALGAR TANJILA JAMIR	10	0
22	2024014113	3372152	KENGAR AISHWARYA KIRAN	8	0

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous)

Scanned with OKEN Scanner

॥ ज्ञान, विज्ञान आणि सुंसस्कार यासाठी शिक्षण प्रसार ॥
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)
कोल्हापूर

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR.
(Empowered Autonomous)

SUPPLIMENT

10/10

Jr. Supervisor's Sign. :
Students Sign. :
Seat No. :
Seat No. in words : वि ।. हिंदी. VSC
Suppliment No. : बी.ए. भाग- ०१
47778
Centre · विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर

नाजिया राकेश नदाफ

प्र. क्र.
Q. No.

* मीडिया लेखन *

प्र. संपादकीय लेखन के प्रमुख तत्व स्पष्ट किजिए।

→ संपादकीय लेखन को Editional Writing कहा जाता है। हालाँकी संपादन का प्रमुख उद्देश है, जागृति पैदा करना, आक्रमक विरोध करना, सराहना करना, बचाव या सुरक्षा करना आदी। समाचार का महत्वपूर्ण अंग संपादकीय लेखन ही होता है, जिसे अखबार का प्रवेश द्वार माना जा सकता है। संपादकीय लेखन जितना सशक्त शैली, प्रामाणिक तथ्य और सहज-सरल एवं स्वाभाविक भाषा में लिखा जाता है। समाचार का स्तर उतना ही पुख्ता बन जाता है। बिना संपादकीय की के अखबार नीरस और ऊबाऊ बन जाता है। संपादकीय लेखन बहुत जिम्मेदारी का काम है। यह संपादकीय लेखन बहुत सोच-समझकर लिखा जाना चाहिए क्योंकी इसे साधारण से लेकर गंभीर किस्म के पाठक पढ़ते हैं। संपादकीय लेखन पाठक के समझ में आजाए इसलिए संपादकीय लेखन के कुछ प्रमुख तत्व हैं, जिसका विवेचन विश्लेषण निम्नलिखित रूप से किया जा रहा है :-

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

02	Section	Q. No.											
		Marks											

प्र. क्र. Q. No.

१) **समसामयिक उपयुक्त विषय का चयन :**
संपादकीय लेखन के लिए समसामयिक ए उपयुक्त विषय का चयन किया जाना अनिवार्य है। अखबार के प्रति पाठकों की रूचि बढ़ाने हेतु यह संपादकीय लेखन समसामयिक, जनउपयोगी विषय का चयन करना आवश्यक है। विषय जितना प्रासंगि होगा, संपादकीय लेखन उतना ही रोचक पाठकों को आकर्षित करेगा; इसमें कोई संदेह नही है। संपादक (एडीटर) विषय चयन करते समय समसामयि विषयों का चयन करता है।

२) **चयनित विषय की पृष्ठभूमि का पर्याप्त ज्ञान :-**
संपादक को चयनित विषय की पृष्ठभूमि का पर्याप्त ज्ञान आवश्यक होना चाहिए। इसके लि संपादक को चौकन्ना रहना पड़ता है। चयनित विषय आवश्यक पृष्ठभूमि का ज्ञान होनेपर ही खबर या लेख के लिए पुख्ता प्रमाण मिलते हैं। संपादकीय याची में तब रहता है जब संपादक चयनित विषय के आवश्यक संदर्भ संपादकीय मे जुड़ जाते हैं। इसमें संपादक को विषय की पूर्वपीठिका यानी पार्श्वभूमि का ज्ञान आवश्यक है ताकी संपादकीय में सत्यता आ जाए।

३) **विषय का पर्याप्त ज्ञान :-** संपादकीय लेखन का संपादन करते समय ध्यान रहे की जिस विषय का चयन किया है उस विषय का समग्र ज्ञान संपादक को होना अनिवार्य बन जाता है। विषय का अधुरा एवं एकांगी ज्ञान संपादकीय लेखन को अधुरा एवं एकांगी सिद्ध्य कर देता है। पाठकों

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त) कोल्हापुर
VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

Q. No.													
Marks													03

आकर्षित करने हेतु संपादकीय लेखन में चयनित विषय का पर्याप्त ज्ञान जरूरी बन जाता हैं।

४) क्रमबदधता : संपादकीय लेखन में विषय का प्रवेश, विषय का विस्तार और अंत में निष्कर्ष क्रम के अनुसार हो ताकी संपादकीय पढ़ते समय एक-एक सूत्र खुलता जाना चाहिए। मानवीय रूचि के अनुसार संपादकीय लेखन में प्रमुख रूप से क्रमबद्ध किया जाना चाहिए। जिस प्रकार खाना परोसने और खाना खाने का एक कम्र होता है उसी प्रकार संपादकीय लेखन मे प्राप्त तथ्य, जानकारी ज्ञान को क्रम से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

५) तर्कसंगत - विवेचन - विश्लेषण : संपादकीय लेखन के विषय - प्रस्तुतीकरण में तर्कसंगत विवेचन - विश्लेषण जरूरी हैं। संपादकीय लेखन तर्कपर आधारित विवेचन की गरिमा को बढ़ावा देता है। इसलिए विषय का विवेचन - विश्लेषण करते समय तर्को का आधार लिया जाना आवश्यक बन जाता हैं।

६) संतुलित एवं सार्थक विवेचन :- संपादकीय लेखन का निपक्षता लाने के लिए विषय का संतुलित एवं सार्थक ~~संपादकीय~~ विवेचन आवश्यक हैं। संतुलित एवं सार्थक संपादकीय लेखन का प्रभाव समग्र जनमानस पर छाया रहता हैं। संपादकीय लेखन में चयनित विषय के दोनो पक्षों को समान महत्व दिया जाना चाहिए और विषय का वर्णन सही अर्थ देनेवाला हो संपादकीय लेखन के कारण अखबार जनमानस में चर्चित रहें।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

04	Section	Q. No.											
		Marks											

प्र. क्र.
Q. No.

7) विषयानुकूल भाषा-शैली :- संपादकीय लेखन की भाषा-शैली प्रभाव-शैली होनी चाहिए। संपादक का दायित्व है संपादकीय लेखन मे भाषा विषय के अनुकूल पठनीय हो इसमे जनप्रचलित या बोलचाल के शब्दो का प्रयोग हैं। इसमे अनेकार्थी संदेहार्थी शब्द न हो। भाषा और अर्थ का सटीक और सार्थक बनाने का काम संपादक का ही हैं इसलिए संपादकीय लेखन में भाषा-शैली का प्रयोग विषय के अनुकूल होना आवश्यक बन जाता हैं।

8) प्रभावशाली शीर्षक :- संपादकीय लेखन का शीर्षक प्रभावशाली होना चाहिए। संपादकीय लेख का शीर्षक संपादकीय के अनुसार हो। आकर्षक, जिज्ञासावर्धन, कौतुहलवर्धक, विश्वसनीय, विषय के अनुकूल, रोचक, पृष्ठसज्जा के अनुकूल, सत्य और तथ्यपर आधारित शीर्षक संपादकीय लेखन को ~~शीर्षक~~ जीवंत बना देता है। इसलिए संपादकीय लेखन का शीर्षक सारे भाव, सारे अंग ध्वनित करनेवाला सकारात्मक और जनमन को प्रेरित करने वाला प्रभावी शीर्षक होना चाहिए ताकी अखबारो की पाठक संख्या बढ सके।

9) संप्रेषणीयता :- संपादकीय लेखन का प्रधान उद्देश ही संप्रेषणीयता होता हैं। संपादक अपने लेख से जो बात जनमानस में पहुँचाना ~~यानी संप्रेषणीयता~~ चाहता है वो बात सहज-सरल शब्दो में पहुँचाना यानी संप्रेषणीयता हैं। संप्रेषणीयता का सीधा है संपादक की बात पाठक की समझ से जाना चाहिए। संपादकीय लेख का मूल उद्देश

COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 Autonomous

Scanned with OKEN Scanner

॥ ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यासाठी शिक्षण प्रसार ॥
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

विवेकानंद कॉलेज
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)
कोल्हापूर

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR.
(Empowered Autonomous)

SUPPLIMENT

Jr. Supervisor's Sign. :	
Students Sign. :	
Seat No. :	
Seat No. in words :	
Suppliment No. :	
	47776
Centre	

प्र. क्र. Q. No.

है की ज्ञान या जानकारी का सही संप्रेषण हो। जो कुछ संपादक अपने लेख के माध्यम से कहना चाहता है उसका अर्थबोध ही संप्रेषणीयता है। संपादक को संपादकीय लेखन में यह ध्यान रहना होगा की जो विषय प्रस्तुत किया जा रहा है उसका उचित संदेश पाठक तक पहुँच जाए।

१०) सुबोधता :-
संपादकीय लेखन करते समय ध्यान रखना होगा की लेख सुबोध या पठनीय है या नहीं। संपादकीय लेख पढ़ते समय समझने में पाठकों को कठिनाई होती हैं, भ्रामक शब्दों का प्रयोग होता हैं तो लेख दुर्बोध हो जाता हैं। इसलिए संपादकीय लेखन सुबोधता का होना अनिवार्य है ताकी पाठक को आसानी से संपादकीय लेखन का बोध हो सके।

११) रोचकता तथा प्रभावक्षमता :-
संपादकीय लेखन का अनिवार्य तत्व है - रोचकता तथा प्रभावक्षमता। संपादकीय लेखन रोचक एवं प्रभावक्षम बनाने के लिए संपादक को

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous)

Scanned with OKEN Scanner

02	Section	Q. No.											
		Marks											

प्र. क्र.
Q. No.

प्रस्तुतीकरण का ढंग ही रोचक एवं प्रभावक्षम बनाना होगा। जिस प्रकार स्वादिष्ट अर्थात, रूचि का खाना कोई व्यक्ती मनचाहा खाता है उसी प्रकार संपादकीय लेखन मे रूचि की बात प्रस्तुत की जानी है तो उसका प्रभाव काफी देर तक बना रहता हैं। इसलिए रोचकता एवं प्रभावक्षमता संपादकीय लेखन के लिए अनिवार्य तत्व हैं।

१२) सहजता एवं प्रवाहमयत्ता :-

संपादकीय लेखन में सहजता एवं प्रवाहमयता का होना आवश्यक है। संपादकीय लेखन में तथ्यों का प्रस्तुतीकरण क्रम के अनुसार करने से उसमें सहजता आ जाती है और उस लेखन मे एक प्रवाह बना रहता है। संपादकीय लेखन में संपादक को ध्यान रखना होगा की जो तथ्य प्रस्तुत किए जा रहे हैं। उसमें एक सिलसीला हो, एक क्रम हो, एक श्रृंखला हो या निरंतरता बनी रहे। लेखन में यदी अनवरन प्रवाह हैं तो ही उसमें सहजता एवं प्रवाहमयता आ जाती है। जैसे पानी प्रवाह बहता हैं, वैसे लेखन में प्रवाह बहना चाहीए उसमें कहीं खीचाव का महसूस नही होना चाहिए। यदी लेखन का प्रवाह निरंतर बना रहता है तो उसमें सहजता अपने-आप बनी रहती हैं।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

Q. No.												
Marks												03

१३) निष्पक्षता :-
संपादकीय लेखन में निष्पक्षता अनिवार्य बनी रहनी चाहिए। जिस प्रकार न्यायालय में किसी मामले के प्रति जज यानी न्यायालय का न्यायाधीश की जो भूमिका रहती है वही भूमिका संपादकीय लेखन में संपादक की होनी चाहिए। इसमें संपादक को दोनो पक्षों को समान महत्त्व देना होगा। किसी के प्रति कम-ज्यादा हो तो उसमें से निष्पक्षता गायब हो जाती है। संपादकीय लेखन में यदी संपादक दोनों पक्षों को समान न्याय देते हुए अगर संतुलन बनाए रखता है तो ही उसमें निष्पक्षता आ जाती है।

१४) प्रामाणिकता :-
संपादकीय लेखन में जो तथ्य प्रस्तुत किए जा रहे है उसमे प्रामाणिकता का होना अनिवार्य है। संपादकीय लेखन में कोई भी वाक्य पुख्ता सबूत के बिना प्रस्तुत किया जाता है, तो उसमें संदेह या आशंका वास करने को लगती है। यदी संपादकीय लेखन सत्य घटना पर आधारित है तो ही उसमें प्रामाणिकता बनी रहती है।

निष्कर्षन :-
कहा जा सकता है की संपादकीय लेखन करते समय समसामायिक उपयुक्त विषय

ESTD JUNE 1964 COLLEGE KOLHAPUR Empowered Autonomous

04	Section	Q. No.											
		Marks											

प्र. क्र.
Q. No.

चयन, चयनिय विषय की पृष्ठभूमि का पर्याप्त ज्ञान, विषय का पर्याप्त ज्ञान, क्रमबद्धता, तर्कसंगत विवेचन- विश्लेषण, संतुलित एवं सार्थक विवेचन, विषयानुकूल भाषा-शैली, प्रभावशाली शीर्षक, संप्रेषणीयता, सुबोधता, रोचकता तथा प्रभावक्षमता, सहजता एवं प्रवाहमयता, निष्पक्षता और प्रामाणिकपणा आदी तत्वों को ध्यान में रखना होगा तभी संपादकीय लेखन स्तरीय एवं सफल बन जाता है।

10

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)
कोल्हापुर

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR
ESTD JUNE 1964
(Empowered Autonomous)

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - SY SEM - IV

Session:NEP 1.0 MAR - APR 2025

Subject: SAHITYA AUR CINEMA(MIN01HIN41) - CIE

Min/Max : 4/10

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2023014138	4101009	DIPALI KRISHNA KHUTALE	10	0
2	2023014152	4101021	KOLI SHREYA SANJAY	10	0
3	2023014302	4101030	AMAN AJIT BHIVDARNE	10	0
4	2023014111	4101043	RITESH ANIL KAMBLE	8	0
5	2023014162	4101044	NISHIGANDHA PINTU LAD	10	0
6	2023014240	4101057	VAISHNAVI SANJAY POWAR	10	0
7	2023014040	4101058	SHRADHA SANJAY DABHADE	10	0
8	2023014307	4101059	SUTAR VAISHNAVI NANDKUMAR	10	0
9	2023014264	4101073	RANJIT RAJKUMAR SHELAKE	8	0
10	2023014178	4101089	MELKERI SHIVRAJ PARSAPPA	10	0
11	2023014020	4101102	BHOSALE SHRISHA SANDIP	10	0
12		4101103	PATIL PRITAM YUVRAJ	8	0
13	2023014306	4101112	NIKHIL DADASO MARLE	10	0
14	2023014295	4101131	WAKRUSHE DNYANESHWAR KRUSHNAT	10	0
15	2023014057	4101135	GAVADE AARTI BHIMRAO	10	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

Scanned with OKEN Scanner

॥ ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार ॥
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha Kolhapur's 42639

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

SUPPLIMENT

Shreya Sanjay Koli 10/10

Suppliment No. :	Signature of Supervisor
Roll No. : 4438	Subject : Hindi [minor]
Class : B.A. SY	Test / Tutorial No. :
Tuple	Div. :

प्रश्न :- जाग तुझको दूर जाना इस कविता का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

महादेवी वर्मा (26 मार्च 1907 - 11 सितम्बर 1987) हिंदी भाषा की कवयित्री थीं। वे हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें 'आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। भारत में साहित्य आकाश में महादेवी वर्मा का नाम ध्रुव तारे की भाँति प्रकाशमान है। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में मनाया गया वे जीवन भर पूजनीय बनी रहीं है वे वर्ष 2007 उनका जन्म शताब्दी के रूप में मनाया गया। 27 अप्रैल 1982 को भारतीय साहित्य में अतुलनीय योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से इन्हें सम्मानित किया गया था।

1. चिर सजग आँखे उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना।
जाग तुझको दूर जाना।
अचल हिमगीरि के हृदय में आज चाहे कंप हो ले,
या प्रलय के आँसुओ में मौन अलसित व्योम डोले,
आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया
आज या विद्युत शिखाओं में निठुर तूफान बोले।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 Empowered Autonomous

Scanned with OKEN Scanner

पर तुझे है नाश-पथ पर चिह्न अपने छोड़ आना।
जाग तुझको दूर जाना।

व्याख्या :- कवयित्री पथिक को सदैव आगे बढ़ने का संदेश देती हुई कहती है की हे पथिक! हमेशा से तेरी सजग व सचेत आँखे आज नींद व आलस्य से भरी हुई क्यों दिखाई दे रही है। आज तू इतना व्यस्त सा क्यों लग रहा है अभी तो तुझे बहुत लम्बा रास्ता तय करना है। स्थिर रहने वाले हिमालय पर्वत डोल उठे या आलस्य से भरे हुए आकाश में चाहे प्रलय आ जाए। चाहे आज चारों तरफ फैलने वाला प्रकाश ही अंधेरे में क्यों न छा जाए। चाहे ऐसा समय आ जाए कि आकाश में चमकने वाली बिजली की एक कठोर तूफान का रूप धारण कर ले परन्तु इन सब मुश्किलो और बाधाओ के आने पर भी तुम अपने कर्तव्य को नही भूलना है। तुझे अपने पथ पर अपने निशान

बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?
विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबा देंगे तुझे यह फूल दे दल ओस-गीले?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना।
जाग तुझको दूर जाना।

व्याख्या :- कवयित्री महादेवी वर्मा कहती है पथिक तू अपने रास्ते पर चलते हुए बहुत सारे सुखों व दुखों को अनुभव करेगा लेकिन तुझे उन बंधनो मे बंधने की कोई आवश्यकता नही है। तुम्हारे आस-पास के लोगों के मोह-माया के बंधन तुझे बाँधने की कोशिश जरूर करेंगे लेकिन तुझे उनमें बंधना नही है। तुम्हे तुम्हारे रास्ते में दिखाई देने वाली आकर्षक चीजे अपनी तरफ खींच लेंगी और तुम बंध जाओगे? लेकिन [illegible]

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous)

दुख और रोना तुझे तेरे भँवरे की मधुर गाना को भी भुला देगा अर्थात जब तुम अपने रास्ते पर बढ़ोगे तो कोई भी बाधा तुझे अपने बंधने मे नहीं बाँध पाएगी। तुम्हारे रास्ते में ओस के गीले कणों के जैसे पल भी आएंगे क्या तुझे ये ओस के गीले का बाँधने की कोशिश करेंगे और तुम उनके अहसास में बंध जाओगे। लेकीन तू। परछाई को किसी भी बंधन मे बंधने मत देना बल्कि आस-पास के सुख-दुख का ध्यान न करके सदैव आगे बढ़ते जाना क्योंकि अभी तुम्हारी मंजिल बहुत दूर है और तुझे बहुत चलना है। इसलिए तू अपनी मंजिल की तरफ लगातार बढ़ते जा।

वज्र का उर छोटे अश्रुकण में धो गलाया?
दे किसे जीवन-सुधा दो घूँट मदिरा माँग लाया?
सो गई आँधी मलय की बात का उपधान ले क्या?
विश्व का अभिशाप क्या चिर नींद बनकर पास आया?
अमरता-सुत चाहता क्यों मृत्यु को उर में बसाना?
जाग तुझको दूर जाना।

व्याख्या :- कवयित्री पथिक को पूछती है कि क्या तूमने अपना वज्र जैसा कठोर मन एक छोटे से आँसू के कण में धोकर गला दिया है जो तू थक-हार कर बैठ गया है। तू किसे अपना जीवन रूपी अमृत देकर दो घूँट मदिरा माँग कर ले आया है। अर्थात तूने अपने अमृत स्वरूप जीवन को मदिरा या अन्य प्रकार के नशों मे क्यो धकेल दिया है। तुम्हारे मन में जो विचारों की आँधी थी या तुम्हारे मन में आगे बढ़ने का जो साहस था वो क्या चंदन की सुगन्ध में डूब कर सो गया है? क्या तुम्हे हमेशा सोए रहने का अभिशाप मिल गया है जो तू थक-हार कर बैठ गया है। क्या तुझे अपने कर्तव्य भूल गया है? तू तो देवताओं की सन्तान है। तुझे अमरता का वरदान है तू जो चाहे वो तू कर सकता है। तुम्हारे अन्दर इतना साहस है

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous)

Scanned with OKEN Scanner

सब कुछ प्राप्त कर सकता है फिर क्यों तू आलस्य से भर कर बैठ गया है। तू अपने अन्दर की शक्ति को जगा और आगे बढ़ अभी तो तुझे बड़ा लम्बा रास्ता तय करके अपनी मंजिल तक पहुँचना है।

कह न ठंडी साँस में अब भूल वह जलती कहानी,
आग हो उर में तभी दृग में सजेगा आज पानी;
हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका, राख
क्षणिक पतंग की है अमर दीपक की निशानी,
है तुझे अंगार शैय्या पर मृदुल कलियाँ बिछाना।
जाग तुझको दूर जाना।

व्याख्या :- कवयित्री कहती है कि हे मनुष्य! तू मत बोल कि आज तू अपने अतित की जलति हुई कहानी को भूल गया है। अगर तेरे हृदय में आग है तभी तेरी आँखो में पानी आ पायेगा अगर तू साहस से लड़ेगा तो तेरी हार हो या जीत हो कोई फर्क नहीं पड़ेगा। तेरा कर्तव्य केवल लड़ना है। लड़ कर तू अगर हार भी जायेगा तब भी तू विजयी ही बनेगा क्योंकि तू तेरा साहस तेरे गले का हार बनेगा। जिस प्रकार दीपक के पास जल गया पतंगा मृत्यू को प्राप्त कर लेता है फिर भी दीपक जलता रहता है। उस पतंगे साथ वह अपना साहस कभी नहीं खोता। इसी तरह तुझे अपने साहस को सदैव जिन्दा रखने की आवश्यकता है। आज तुझे अंगारो की शय्या पर कोमल कलियों बिछाने की आवश्यकता है अर्थात तुझे अपने क्रोध पर काबू पाकर सदैव आगे बढ़ते जाना है।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous)

10

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - SY SEM - IV

Session:NEP 1.0 MAR - APR 2025

Subject: SAMBHASHAN KLA - II (VSC01HIN41) - CIE

Min/Max : 4/10

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2023014075	4101008	HALWANKAR PRATHAMESH MARUTI	10	0
2	2023014126	4101028	SIZAN HUSSAIN KAPDI	10	0
3	2023014256	4101038	SATTARMEKAR SAHAD SAMIR	10	0
4	2023014168	4101051	CHAITANYA UMAKANT MACHHALE	10	0
5	2023014274	4101052	PRAJAKTA SAGAR SHINGE	10	0
6	2023014174	4101064	MALKEKAR KRISH AATISH	10	0
7	2023014124	4101066	KAMBLE TEJAS SUNDAR	10	0
8	2023014270	4101067	SHINDE SIDDHARTH ARJUN	10	0
9	2023014022	4101069	BIRAJADAR MANDIRA VIJAY	10	0
10	2023014091	4101082	KIRTIKA SURESH KADAM	10	0
11	2023014084	4101088	JADHAV SHRIDATTA RAJENDRA	10	0
12	2023014014	4101096	SHREYA VISHWAS BARALE	10	0
13	2023014024	4101107	BODAKE SAMARTH SAGAR	10	0
14	2023014317	4101119	YASH MANOHAR BHURKE	10	0
15	2023014203	4101130	PARAJI PAYAL SANJAY	10	0
16	2023014121	4101141	KAMBLE SURAJ MAHADEV	10	0

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

॥ ज्ञान, विज्ञान आणि सुंसस्कार यासाठी शिक्षण प्रसार ॥
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे
विवेकानंद कॉलेज (अधिकारप्रदत्त स्वायत्त) कोल्हापूर

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR.
(Empowered Autonomous)

SUPPLIMENT

10/10

Jr. Supervisor's Sign. :	
Students Sign. :	
Seat No. :	
Seat No. in words :	
Suppliment No. :	
	47785
Centre	

Kritika Suresh Kadam (VSC) Hindi

प्र. क्र. / Q. No. भाषा कौशल एवं उसके प्रकार पर प्रकाश डालिए।

भाषा कौशल एवं इसके प्रकार

भाषा:- भाषा हमारे जीवन का अति महत्वपूर्ण अंग होती है। हर व्यक्ति को अपने विचार और भावों की अभिव्यक्ति के लिए एक माध्यम की आवश्यकता होती है और भाषा इसके लिए सबसे सार्थक माध्यम होता है परन्तु अपने विचारों को सही से अभिव्यक्त करने हेतु कुछ कौशल होते हैं, जिनके सही इस्तेमाल से ही व्यक्ति अपने विचारों या भावों को सही अर्थ में सही रूप में किसी के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है।

भाषा कौशल के हमारे व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाता है और एक योग्यता प्रदान करता है, जो हमें दूसरे व्यक्तियों से भिन्न बना सकती है। इसके द्वारा एक साधारण से विचार को भी व्यक्ति उत्तम शब्दावली एवं सही लय और प्रवाह के इस्तेमाल से बहुत प्रभावशाली बना सकता है।

श्रवण (सुनना), वाचन (बोलना), पठन (पढ़ना) और लेखन (लिखना) इनका सही वर्गीकरण दो प्रकार से होता है ग्रहणात्मक एवं अभिव्यक्तात्मक भाषायी कौशल। लेखन (लिखना)। इनका सही वर्गीकरण दो प्रकार से होता है - ग्रहणात्मक एवं अभिव्यक्तात्मक भाषायी कौशल। इन दोनों कौशलों की सार्थकता सम्प्रेषण (बातचीत) की पूर्णता अर्थात भाव विचार ग्रहण एवं भाव विचार प्रदान होती है। श्रवण और पठन ग्रहणात्मक कौशल के अंतर्गत है

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous)

Scanned with OKEN Scanner

02	Section	Q. No.												
		Marks												

प्र. क्र.
Q. No.

अर्थात ऐसे कौशल जिन्हें ग्रहण किया जाता है। वाचन एवं लेखन अभिव्यक्तात्मक कौशल के अंतर्गत आते है। जिनका प्रयोग अपने विचारों भावों आदि की अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है। ये सभी कौशल हमारे व्यावहारिक जीवन का अभिन्न अंग है।

1) श्रवण कौशल: भाषा कौशल विकास का प्रारम्भ सबसे पहले श्रवण कौशल से होता है। जन्म लेने के बाद बच्चा सबसे पहले सुनने की स्थिति में ही होता है। आयु के साथ वह सुने गए शब्दों का अर्थ भी समझने लगता है। श्रवण केवल ध्वनियों का सुनना मात्र नहीं है। इसमें किसी कथन के ध्यानपूर्वक सुनने, सुनी हुई बात पर चिंतन-मनन करने तथा चिंतन के बाद उसपर अपना मंतव्य स्थिर करके तदानुसार व्यवहार करने जैसी क्रमबद्ध प्रक्रियाएं सम्मिलित हैं। ये सभी मानसिक स्तर के विकास, सही विकास, सही शिक्षण एवं अभ्यास के साथ एक व्यक्ति में आते हैं।

2) मौखिक अभिव्यक्ति कौशल (बोलना): एक व्यक्ति द्वारा अपने भावों और विचारों को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करने हेतु ध्वनि संकेत युक्त भाषा का प्रयोग मौखिक अभिव्यक्ति कहलाता है। परन्तु वह भाषा श्रोता को समझ भी आये, इसलिए वह अभिव्यक्ति स्पष्ट, सहज, शुद्ध, स्वभाविक, उसके मानसिक स्तर के अनुरूप एवं विचार क्रमबद्ध होनी चाहिए।

3) पठन कौशल (पढ़ना): श्रवण कौशल एवं मौखिक अभिव्यक्ति के पश्चात जिस कौशल पर शिक्षक ध्यान देता है, वह है पठन कौशल, अर्थात लिखित भाषा को पढ़ने की कला एवं क्षमता। इसमें दो शब्दों का विशेष महत्व है - वाचन एवं पठन। लिखित सामग्री को उच्चरित करने की क्षमता वाचन कहलाती है, परन्तु पठन में इसके अर्थग्रहण पर बल दिया जाता है।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

Section	Q. No.												03
	Marks												

4) लेखन कौशल: सबसे अंत में आता है लेखन कौशल परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है की इसको सबसे अंत में ही सिखाया जाए। विद्यार्थी लिखना तो बहुत पहले से प्रारम्भ कर देते हैं परन्तु सुदृढ लेखन कौशल में क्षमता सही अभ्यास एवं शिक्षण द्वारा ही आती है। भावों और विचारों को सुसम्बद्ध तरीके से लिखित रूप देना ही लेखन कौशल के अंतर्गत आता है। पर लिखित रचना से पूर्व उसकी मौखिक रचना का अभ्यास आवश्यक है।

लिखित रचना साहित्य की दृष्टी से सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है क्यूंकी यह मौखिक रचना की अपेक्षा अधिक सुगठित संयम, सशक्त एवं प्रभावपूर्ण होती है। उच्च कोटि की लिखित रचना कई सदियों तक मानव को उत्साह ज्ञान, ऊर्जा एवं सन्देश देने का कार्य करती है। हमारे साहित्यिक, सांस्कृतिक, व्यावहारिक व अंतर्राष्ट्रीय क्रियाकलापों का निर्वाह लिखित भाषा के माध्यम से होता है। हर प्रमाण अधिकतर लिखित में ही मान्य होते है।

लेखन रचना कौशल इसलिए भी महत्वपूर्ण होता है क्यूंकि इसके द्वारा बच्चों की सृजनात्मक प्रतिभा जागृत कर उन्हें स्वतंत्र भाव प्रकाशन के लिए प्रेरित किया जा सकता है। रचना का आशय ही है- सार्थक सुसम्बद्ध, सोद्देश्य, क्रमात्मक अभिव्यक्ति, किसी राष्ट्र के समस्त संसदिय, शासकीय, न्यायिक, सैनिक ज्ञान-विज्ञान, संचार आदि कार्यों का संवहन लिखित निर्देशों और संदेशों से ही होता है-

रचना शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु कक्षा में एक प्रक्रिया अपनायी जा सकती है। सर्वप्रथम विषय और विधा का चयन किया जाना चाहिए। अर्थात किस बारे में लिखना चाहते है और किस प्रकार से जैसे, पत्र, सार या निबंध। इसके उपरान्त विषय का थीमों, प्रश्नोत्तर द्वारा मौखिक विवेचन किया

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

04	Section	Q. No.												
		Marks												

प्र. क्र.
Q. No.

जाना चाहिए। इसमे शिक्षक या विद्यार्थी (एक रूपरेखा) या ढांचा प्रस्तुत करने में सक्षम हो सकेंगे। इसके बाद लेखन कार्य आरम्भ कर बाद में उसमें कोई त्रुटि होने पर संशोधन किया जाना चाहिए।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR
ESTD JUNE 1964
(Empowered Autonomous)

10

विवेकानंद कॉलेज
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)
कोल्हापूर

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - SY SEM - IV **Session:**NEP 1.0 MAR - APR 2025

Subject: SRUJNATMAK LEKHAN - II (SEC01HIN41) - CIE

Min/Max : 4/10

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2023014075	4101008	HALWANKAR PRATHAMESH MARUTI	10	0
2	2023014126	4101028	SIZAN HUSSAIN KAPDI	10	0
3	2023014256	4101038	SATTARMEKAR SAHAD SAMIR	10	0
4	2023014168	4101051	CHAITANYA UMAKANT MACHHALE	10	0
5	2023014274	4101052	PRAJAKTA SAGAR SHINGE	10	0
6	2023014174	4101064	MALKEKAR KRISH AATISH	10	0
7	2023014124	4101066	KAMBLE TEJAS SUNDAR	10	0
8	2023014270	4101067	SHINDE SIDDHARTH ARJUN	10	0
9	2023014022	4101069	BIRAJADAR MANDIRA VIJAY	10	0
10	2023014091	4101082	KIRTIKA SURESH KADAM	10	0
11	2023014084	4101088	JADHAV SHRIDATTA RAJENDRA	10	0
12	2023014014	4101096	SHREYA VISHWAS BARALE	10	0
13	2023014024	4101107	BODAKE SAMARTH SAGAR	10	0
14	2023014317	4101119	YASH MANOHAR BHURKE	10	0
15	2023014203	4101130	PARAJI PAYAL SANJAY	10	0
16	2023014121	4101141	KAMBLE SURAJ MAHADEV	10	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

Scanned with OKEN Scanner

Page No.
Date

10/10

नाम — पायल संजय पारसी
कक्षा - BA·SY
विषय — सृजनात्मक लेखन
Typed
तारीख - 12/3/2025

* कहानी लेखन के सूत्रों का परिचय दीजिए.

→ 1) संवेदना की खोज और उसकी प्रामाणिकता :-

एक अच्छी कहानी लिखने के लिए आवश्यक है कि लेखक के लिए अपने मन को टटोले कि उसके पास कोई संवेदना है या नहीं। धनंजय वर्मा के शब्दों में 'जीवनगत प्रभाव प्रतिक्रियाएँ, वैचारिक उद्वेलन और संवेदन कहानी का कथ्य मात्र है। संवेदना कुछ सूक्ष्म शब्द है। इसे कथानक अथवा गद्यात्मक रूप देने के लिए 'उद्देश्य' प्रयोजन मुख्य विचार अथवा 'थीम कहा जा सकता है लेकिन आजकल कहानियों में 'थीम उपदेश का पर्याय किसी रूप में नहीं हो सकती।

2) आकर्षण और कौतूहल :-

धनंजय वर्मा के शब्दों मे 'कहानी का आदिम राग कौतूहल है। 'आगे क्या हुआ और 'उसके बाद फिर के बिना कहानी आगे बढ़ ही नहीं सकती। ...आज की कहानी की एक अच्छी कहानी की पहली पहचान उसकी पठनीयता और श्रवणीयता है, रीडेबिलिटी है.. आकर्षण और आश्चर्य कहानी के मूल और आदिम तत्व हैं। कहानी के कथानक में, उसकी संवेदना में यह कौतूहल आकर्षण और जिज्ञासा तत्व अवश्य रहने चाहिए, यह बात कहानी लेखन के समय लेखक ध्यान में रखना चाहिए।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous)

Scanned with OKEN Scanner

3) पात्र व चरित्र-चित्रण :-

कहानी में पात्रों का भी विशिष्ट महत्त्व है। कथा होगी तो पात्र भी होंगे ही। लेकिन जिस प्रकार छोटे घर में बहुत सारे अभ्यागत आमंत्रित नहीं किए जा सकते, उसी प्रकार कहानी में चरित्र जितने कम हों। उतना ही अच्छा है। इस बात का ध्यान अवश्य रहे कि सभी चरित्र प्रामाणिक हों। पात्रों के गुण-दोष, स्वभाव, व्यवहार, योग्यता, रूप-रंग, आकार आदि सभी बातें चरित्र-चित्रण के अंतर्गत आता है और इन विषयों पर जो भी कहानी प्रकाश डालती है वही अधिक प्रभावशाली होती है।

4) परिवेश :-

कहानी में परिवेश से तात्पर्य केवल बाह्य जीवन-जगत का विवरण भर नहीं है बल्कि जीवन-स्थितियों और समय के यथार्थ के उन प्रभावों से है जिनसे कहानी की घटना और कार्यव्यापार रूपायित होते हैं। इससे चरित्रों का मनोविज्ञान और कहानी की केंद्रिय अनुभूति निर्धारित होती है। कथा के विकास, चरित्रों की गतिविधियों, कहानीकार की दृष्टि और संवेदना, व्यक्त होने वाले अनुभव और चेतना पर परिवेश का निर्णायक प्रभाव होता है। देश और समाज, युग और काल दोनों का कहानी का वस्तु-शिल्प रूपायित करता है।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

Page No.
Date

5) वर्णन और संवाद :-
वर्णन और संवाद - ये वे दो उपकरण हैं जिनके द्वारा कहानी का विकास होता है। ये दोनों अकेले या सम्मिलित होकर कहानी की संवेदना, कथानक और चरित्र - चित्रण को प्रकट कर सकते हैं। वर्णन कहीं पर घटना को ही प्रस्तुत करता है। संवाद भी घटना के विकास, चरित्र के प्रकाशन और विचार प्रस्तुति के उपयोगी और स्वाभाविक साधन हैं।

6) भाषा और शैली :-
कहानी - लेखक को पात्रों के अनुकूल और अपनी रुचि के अनुसार भाषा का प्रयोग करना चाहिए जो कथानक और चरित्र - चित्रण को वर्णन को और संवाद द्वारा व्यक्त कर सके। कहानी की भाषा जितनी यथार्थ और बोल-चाल की भाषा के निकट होगी, कहानी उतनी ही प्रौढ और सफल होगी। तथ लेखक प्रायः अपनी साहित्यिकता की कहानी उतनी ही प्रौढ और सफल होगी।

7) प्रतीक - संकेत योजना :-
आज कहानी का स्वरूप सरल न होकर जटिल हो गया है। मानव मन के द्वंद्वों को परत - दर - परत खोलना कहानी का साध्य बनता जा रहा है। यही कारण है कि कहानी में सपाट विवरण और स्थितियों या अनुभवों के सीधे वर्णन की प्रवृत्ति कम हुई है और प्रतीकों तथा संकेतों से कथ्य को प्रभावकारी बनाने की प्रवृत्ति बढ़ी है।

ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous) ... COLLEGE KOLHAPUR
Scanned with OKEN Scanner

Page No.
Date

8) आकार :-
कई बार देखा गया है कि नए लेखक लंबी कथाओं की ओर अधिक आकर्षित होते हैं जिनमें एक व्यक्ति का संपूर्ण जीवनकाल ही नहीं, उसकी कई पीढ़ियों की कथा कहने का प्रयत्न किया जाता है लेकिन इतने लंबे कथानक कहानी विधा के लिए अत्यंत अनुपयुक्त होते हैं। संवेदना की एकता की दृष्टि से एक छोटी घटना ही अधिक उपयुक्त होती है।

9) प्रस्तुति :-
क) तटस्थ दर्शक :- कहानीकार कहानी को जब इस तरह प्रस्तुत करता है मानो वह पूरे घटनाक्रम और स्थिति-विन्यास का तटस्थ दर्शन है तब वह केवल वर्णन करता है।
ख) सक्रिय सहभागी :- इस प्रस्तुति में कहानीकार कहानी के घटना चक्र, स्थिति-विन्यास और अनुभव-क्रम को इस तरह प्रस्तुत करता है मानो वह सब उसके साथ ही घटा है।

10) शीर्षक और आदि-अंत :-
कहानी का शीर्षक प्राथमिक महत्व होता है। वह इतना सांकेतिक और व्यंजक होना चाहिए कि कहानी के कथ्य के और अनुभव-घटना और स्थिति को अनयास व्यक्त कर दे। इसी प्रकार कहानी का आदि और अंत भी महत्वपूर्ण है।

ESTD JUNE 1964 VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR Autonomous

Scanned with OKEN Scanner

Page No.
Date

11) प्रभावान्विति :-

प्रभाव कहानी की श्रेष्ठता और उसकी रचनात्मक समृद्धि का सार्वभौमिक महत्त्वपूर्ण बिंदु है। कहानी का आकार और आकर्षण, उसकी प्रामाणिकता और प्रस्तुति सब मिलकर कहानी के प्रभाव को एकान्वित और एकाग्र करते हैं। कहानी के घटना-क्रम, स्थिति-विन्यास, पात्र व चरित्रांकन, कार्यव्यापार, रूप-विधान, संवाद और भाषा-शैली की सार्थकता इनके एकीकृत प्रभाव में ही है तभी कहानी अपने लक्ष्य और उद्देश्य को प्राप्त कर पाने में सफल हो पाती है।

10

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner